रेबीज़

यह रोग हिड़काव, जलातंक व हाइड्रोफोबिया नाम से भी जाना जाता है

कारण

यह रोग तंत्रिका प्रेरित विषाणु द्वारा होता है

रोग का फैलाव

यह जूनोटिक रोग है जो पशुओं व मनुष्यों में पागल पशु के काटने पर विषाणु युक्त लार से फैलता है

लक्षण

मूक पागलपन

- जबड़े की मांसपेशियों में पक्षाघात, जिससे कुत्ता न तो भौंक सकता है और न ही काट सकता है
- पक्षाघात ऊपर के अंगों से नीचे उतरता है जिससे पशु घूम फिर नहीं सकता तथा तीन चार दिन में उसकी मृत्यु हो जाती है

उग्र पागलपन

- गतिवान वस्तुओं पर झपटना व काटने को दौड़ना तथा असामान्य चाल
- निचले जबड़े का लटककर जीभ का बाहर निकल आना व मुँह से अत्यधिक लार गिरना
- पशु की भोजन नली के लगवाग्रस्त होने पर निगलने में तकलीफ

इस रोग से ग्रसित मादा पशुओं में ताव के लक्षण दिखायी देते हैं

बचाव व उपचार

पालतू कुत्तों को प्रतिवर्ष रेबीज़ रोग से बचाव हेतु टीका लगवायें

- पागल पशु को एकान्त स्थान पर बांध कर दस दिन तक निगरानी रखें
- पागल कुत्ते के काटने पर उसी दिन से एन्टी रेबीज़ टीके की प्रथम खुराक, तीसरे दिन द्वितीय खुराक, सातवें दिन तृतीय खुराक, चौहदवें दिन चौथी खुराक का टीका लगवायें तथा इसके बाद 30 वें तथा 90 वें दिन पर प्रथम व द्वितीय बूस्टर डोज का टीका लगवायें
- रोग के सम्पर्क में आयी वस्तुओं तथा मृत पशुओं को जला देना चाहिए या चूने के साथ जमीन में गाड़ देना चाहिये
- पागल पशु के काटने पर तुरन्त कटे हुए घाव को साबुन से अच्छी तरह से धोना चाहिये
- काटे हुए भाग पर पोटेशियम परमैंगनेट, कार्बोलिक एसिड या अन्य ऐन्टीसेप्टिक (स्प्रिट) आदि लगाना चाहिये

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.)
(राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय)
एन.एच. 11, आगरा रोड़, जामडोली, जयपुर-302031